आम तौर पर देखा जाता है कि जाड़े में लोग सिमट कर रहना चाहते हैं और लोगों की इस प्रवृत्ति के कारण फ्लू अधिक तेजी से फैलता है।

जब हो जाए पुरुष मेनोपाज

मानव शरीर की शारीरिक रचना की बेहतर समझ का वर्णन उसकी मर्दानगी से जुड़ा हुआ है। आज के पुरुष प्रधान समाज में लोग अपनी इगो के कारण अपनी शारीरिक अक्षमता के बारे में खुल कर बातें नहीं करते हैं। यहां तक कि भारत में भी मेडिकल पाठ्यक्रमों में भी पुरुष के यौन विकारों को काफी कम महत्व दिया गया है। क्या यह आश्चर्य का विषय नहीं है कि प्रसूतिशास्त्र के पूरे विषय के बारे में मेडिकल साइंस में विस्तार से चर्चा की गई है जबकि पुरुषों के यौन समस्याओं के बारे में कोई चर्चा नहीं होती।

डा. राजेश तनेजा
(सीनियर यूरोलॉजिस्ट)

यहां तक पुरुषों के यौन समस्याओं का इलाज नीम-हकीमों द्वारा धड़ल्ले से किया जाता है। हाल ही में यूरोलोजी में विशेष तौर पर इन विषयों को प्रमुखता दी जा रही है। एंड्रालोजी एक ऐसा विषय है जिसमें पुरुष बंध्यता, पौरुष ग्रंथि में विकार के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। दिल्ली स्थित पुष्पावती सिंघानिया रिसर्च इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ मूत्ररोग विशेषज्ञ डा. राजेश तनेजा का कहना है कि यह एक मिथ है कि हमेशा जिन युगलों को बच्चा नहीं होता उनमें से इसके लिए अधिकतर दोष महिलाओं के ऊपर मढ़ दिया जाता है जबकि ऐसे युगल में आधे जोड़ों में कसूरवार पुरुष ही होते हैं। डा. तनेजा के अनुसार आधे दंपतियों में पुरुष अक्षम होते हैं, क्योंकि उनमें बंध्यता होती है। उनका कहना है कि ऐसे पुरुषों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है जिनकी पौरुष ग्रंथि ठीक ढंग से काम नहीं कर रही है, ऐसे लोगों की शल्य चिकित्सा कर उनके बंध्यता को दूर किया जा सकता है। डा. तनेजा के अनुसार आज सभी वर्ग और आयु के पुरुषों में यौन विकार होते हैं, लेकिन अज्ञानतावश ऐसे लोग नीम-हकीम और सस्ते साहित्य के चक्कर में अपना जीवन चौपट कर लेते हैं जिससे उनकी समस्या और अधिक बढ़ती जाती है। मध्य आयु वाले पुरुषों में टेस्टोस्टोरेन ग्रंथि के ठीक ढंग से काम नहीं करने पर मेनोपॉज के शिकार हो जाते हैं, लेकिन बुजुर्ग लोगों में दिल की बीमारी, मधुमेह, या मेडिटेशन के बुरे प्रभाव की वजह से मेनोपाज के शिकार हो सकते हैं। डा. तनेजा कहते हैं कि एक अच्छा एंड्रोलोजिस्ट कुछ टैस्ट कर इस प्रकार के यौन विकारों का इलाज करते हैं। डा. तनेजा कहते हैं कि कई बार रोग अगर गंभीर होता है तो पुरुषों के शिश्न में सिलिकान प्रत्यारोपण किया जाता है जिससे उनके पौरुष ग्रंथि ठीक ढंग से काम कर सकें।